दिशा में कुछ सफलता महसूस की गई। 1998 से इनका बाहरी लोगों से सम्पर्क बढ़ा और फिर कुछ ही वर्ष बीतें हैं जब इस आदिम जनजाति के लोगों ने हमारी मैत्री को पूरी तरह काबूल किया है। इनकी संख्या लगभग 300 है।

4. शोम्पेन : मंगोलाइट नस्ल की ग्रेट निकोबार के जंगलों में बसने वाली इस संकोची स्वभाव के आदिम जनजाति के लोगों का आधुनिक लोगों से मिलना–जुलना जारी है, इन्हें भी प्रशासन द्वारा स्वास्थ्य, आवास तथा अन्य सुविधाएं मुहैया की जा रही हैं। पर ये अपनी ही जंगल की दुनिया में अलग–थलग रहना। ज्यादा पंसद करते हैं। इनकी संख्या 300 के करीब हैं।

जहां तक निग्रोटो नस्ल की आदिम जनजाति सेंटिनलीज़ का सवाल है, इनकी दुनिया उत्तरी सेंटीनल द्वीप तक ही अब तक सीमित है। आधुनिक मानवों का ध्यान अपने जरूरत के लिए भूमि की तलाश के चलते चूंकि उस ओर नहीं गया, इसके चलते समुद्र में अलग–थलग पड़े इस द्वीप के इन आदिम जनजातियों के कबीले से शायद इसलिए ही अब तक मैत्री नहीं हो पाई है। हालांकि कुछ एक बार मैत्री सम्पर्क अभियान दल उस ओर गया और यहां के निवासियों ने दिए जाने वाले उपहारों को स्वीकार भी किया, पर एक निश्चित दूरी भी बनाए रखी। अब ये दूरी कब पटेगी, कहना मुश्किल है। निग्रेटो नस्ल के अंडमान में बसने वाली आदिम जनजातियों के कबीलों में अब ये ही एक ऐसा कबीला है, जो अब तक आधुनिक दुनिया के मानवों से खार खाता है। समझा जाता है कि इनकी संख्या 100 के आस–पास होगी।

ग्रेट अंडमानी और ओंगी कबीलों की आधुनिकता की मुख्यधारा में कदम रखने के बाद उनकी आबादी का समय के साथ कम होते जाना हमारे सामने प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। साफ है कि अपनी जंगल की दुनिया में स्वछंद रूप से जीवन जीते, शिकार के लिए मेहनत करते इन लोगों को जब सभी सुविधाएं मुहैया